co“33”
pib.nic.in
mod.nic.in

पत्र सूचना कार्यालय (रक्षा विंग))
भारत सरकार
****

‘हर काम देश के नाम’

नई दिल्ली, कार्तिक 11, 1945
गुरुवार, नवंबर 02, 2023

रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने बेंगलुरु में 'इंडिया मैन्युफैक्चरिंग शो' का किया उद्घाटन
"लघु उद्योग भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं"

सक्रिय उद्योग भागीदारी के साथ, भारत जल्द ही 'आत्मनिर्भर' और एक वैश्विक विनिर्माण केंद्र बन जाएगा

रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने नवंबर 02, 2023 को बेंगलुरु, कर्नाटक में तीन दिवसीय 'इंडिया मैन्युफैक्चरिंग शो' का उद्घाटन किया। इस शो का आयोजन संयुक्त रूप से लघु उद्योग भारती और आईएमएस फाउंडेशन द्वारा किया गया है और रक्षा उत्पादन विभाग, रक्षा मंत्रालय द्वारा समर्थित है। इस आयोजन का केंद्रीय विषय 'मेक इन इंडिया, मेक फॉर द वर्ल्ड' है।

रक्षा मंत्री ने उद्घाटन समारोह में उपस्थित उद्योग जगत के प्रमुख हस्तियों और युवा उद्यमियों को संबोधित करते हुए लघु उद्योगों को भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ बताया। उन्होंने यह भी कहा कि लघु उद्योग राष्ट्र के विकास में अत्यधिक योगदान देते हैं। उन्होंने कहा, 'छोटे उद्योग भारतीय अर्थव्यवस्था के वाहक हैं। मोटर जितनी तेजी से चलती है, उतनी ही तेजी से अर्थव्यवस्था की गाड़ी चलती है.' उन्होंने अर्थव्यवस्था में स्थिरता बनाए रखने का श्रेय छोटे उद्योगों को दिया.

श्री राजनाथ सिंह ने देश के सामाजिक-आर्थिक विकास में इन उद्योगों के महत्वपूर्ण योगदान पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा, 'किए गए निवेश की तुलना में छोटे उद्योग बड़े उद्योगों की तुलना में अधिक रोजगार के अवसर पैदा करते हैं। वे समाज में धन का अधिक फैलाव भी सुनिश्चित करते हैं। कई एमएसएमई निर्यात में अच्छा

कर रहे हैं और दुनिया की सबसे बड़ी कंपनियों की वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला का हिस्सा बन रहे हैं। भारी उद्योग भी देश के विकास में बड़ी भूमिका निभाते हैं, लेकिन छोटे उद्योगों की अनदेखी कर देश पूरी तरह से प्रगति नहीं कर सकता।

रक्षा मंत्री ने उस समय को याद किया जब भारत को 'सोने की चिड़िया' कहा जाता था और एक बड़ा कारण यह था कि गांवों और कस्बों में कई छोटे उद्योग थे, जो लोगों को रोजगार प्रदान करते थे। "प्राचीन काल में, भारत में बड़े पैमाने पर उद्योग नहीं थे; केवल छोटे उद्योग थे। कपड़ा, लोहा और जहाज निर्माण तीन उद्योग थे जिनके लिए भारत पूरी दुनिया में जाना जाता था। इन प्राचीन उद्योगों ने हमारी औद्योगिक क्षमता का प्रदर्शन किया।"

श्री राजनाथ सिंह ने बड़े उद्योगों की तुलना में छोटे उद्योगों की परिवर्तनों को आसानी से अपनाने की क्षमता को भी रेखांकित किया। उन्होंने कहा, 'यह छोटे उद्योगों की अनुकूलनशीलता है जो नवाचार की संभावनाओं को बढ़ाती है। कई बार, छोटे उद्योग नए उत्पादों, सेवाओं और व्यापार मॉडल के मामले में बड़े उद्योगों की तुलना में अधिक नवाचार लाते हैं।

रक्षा मंत्री ने अर्थव्यवस्था पर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के दर्शन को याद किया, जिसमें उन्होंने भारी उद्योगों के बजाय छोटे उद्योगों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रोत्साहित किया था। इसका कारण स्थानीय समुदायों के साथ छोटे उद्योगों के मजबूत संबंध हैं। उन्होंने कहा कि भले ही उनका उत्पादन पैमाना छोटा है, लेकिन वे स्थानीय जरूरतों के अनुरूप बेहतर हैं।

श्री राजनाथ सिंह ने कहा कि बड़े उद्योग, जिनका कारोबार हजारों करोड़ रुपये है, कभी छोटे उद्योग थे, जो उनके महत्व को दर्शाता है। उन्होंने लघु उद्योगों को औद्योगिक विकास का युवा कहा; जिसमें अधिक ऊर्जा, नवीनता और कुछ नया बनाने की क्षमता है। उन्होंने जोर देकर कहा कि छोटे उद्योगों की ओर ध्यान आकर्षित करने का मतलब भारी उद्योगों के महत्व को कम करना नहीं है। उन्होंने दोनों के बीच संबंधों को सहजीवी करार दिया, जिसमें दोनों अपनी लाभप्रदता के लिए एक-दूसरे पर निर्भर थे।

लोगों के एक वर्ग की राय का उल्लेख करते हुए, रक्षा मंत्री ने कहा, "अर्थव्यवस्था की अवधारणा को समझने की आवश्यकता है; स्वार्थी मकसद और लाभ के मकसद के बीच की बारीक रेखा। निजी उद्योगों का मुनाफा भारत में करोड़ों परिवारों तक पहुंचता है, जिसकी वजह से इस देश की अर्थव्यवस्था चल रही है। यदि निजी उद्योग लाभ के

उद्देश्य पर काम नहीं करते हैं, तो वे अर्थव्यवस्था में योगदान करने में सक्षम नहीं होंगे। "लाभ स्वार्थी नहीं है, लाभ वैध लाभ है"।

श्री राजनाथ सिंह ने सरकार द्वारा लघु उद्योगों पर दिए गए महत्व पर बल दिया और उनके कल्याण को सुनिश्चित करने हेतु लिए गए कई निर्णयों का उल्लेख किया। इनमें 2015 में शुरू की गई मुद्रा योजना भी शामिल है, जिसके तहत एमएसएमई को बिना कुछ गिरवी रखकर प्राप्त किया जाने वाला लोन (कोलैटरल-फ्री लोन) देने का प्रावधान था। सरकार ने कोविड-19 महामारी के दौरान एमएसएमई के लिए करोड़ों रुपये का अतिरिक्त ऋण भी प्रदान किया।

रक्षा मंत्री ने रक्षा क्षेत्र में एमएसएमई के लिए उठाए गए अभूतपूर्व कदमों का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा, 'हम पहली सरकार हैं जिसने हथियारों के आयात के लिए खुद पर प्रतिबंध लगाया है। हमने पांच सकारात्मक स्वदेशीकरण सूची जारी की, जिसके तहत 509 उपकरणों की पहचान की गई है, जिनका निर्माण अब भारत में होगा। इसके अलावा, रक्षा सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (डीपीएसयू) के लिए चार सकारात्मक स्वदेशीकरण सूची भी प्रख्यापित की गई, जिसके तहत 4,666 वस्तुओं की पहचान की गई, जिन्हें देश के भीतर निर्मित किया जाएगा। हमारे घरेलू उद्योगों के लिए पर्याप्त मांग आश्वासन सुनिश्चित करने के लिए, हमने रक्षा पूंजी अधिग्रहण बजट का 75% स्थानीय कंपनियों से खरीद के लिए आरक्षित किया। यह धनराशि लगभग एक लाख करोड़ रुपये है। ये कदम हमारे एमएसएमई को मजबूत करेंगे और उन्हें 'आत्मनिर्भर' बनाएंगे।

श्री राजनाथ सिंह ने रक्षा उत्कृष्टता के लिए नवाचार (आईडीईएक्स) पहल का भी उल्लेख किया, जिसे स्टार्ट-अप और अन्वेषकों के माध्यम से रक्षा विनिर्माण में नए विचारों को आमंत्रित करने के लिए शुरू किया गया था। उन्होंने कहा कि आईडीईएक्स प्राइम को उन परियोजनाओं का समर्थन करने के लिए लॉन्च किया गया था, जिन्हें रक्षा क्षेत्र में स्टार्ट-अप की मदद के लिए 1.5 करोड़ रुपये से 10 करोड़ रुपये तक के समर्थन की आवश्यकता होती है।

रक्षा मंत्री ने लघु उद्योग भारती को सरकार और उद्योग के बीच सेतु करार दिया। उन्होंने कहा, “एक संस्था के रूप में लघु उद्योग भारती को छोटे उद्योगों की समस्याओं से सरकार को अवगत कराना चाहिए। हम जल्द से जल्द समाधान निकालेंगे। इसकी एक और महत्वपूर्ण भूमिका है। सरकार और समाज को उद्योगों से कुछ उम्मीदें हैं। एक उद्योग संघ के रूप में, इसे उन अपेक्षाओं के अनुरूप काम करना चाहिए।

उद्योग की जितनी जिम्मेदारी अपनी बैलेंस शीट और लाभ-हानि के प्रति है, उतनी ही जिम्मेदारी राष्ट्र के प्रति भी है। आपको यह सुनिश्चित करना चाहिए कि आप उच्च गुणवत्ता वाले और लागत प्रभावी उत्पाद प्रदान करें। आपको सभी हितधारकों के हितों का ध्यान रखना चाहिए। पर्यावरण को ध्यान में रखते हुए स्वच्छ प्रौद्योगिकियों के उपयोग को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।"

श्री राजनाथ सिंह ने इस बात की सराहना की कि लघु उद्योग भारती के माध्यम से देश के छोटे उद्योग अच्छी प्रगति कर रहे हैं। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि यदि उद्योग कड़ी मेहनत और समर्पण के साथ आगे बढ़ते रहे तो आने वाले समय में भारत आत्मनिर्भर और वैश्विक विनिर्माण केंद्र बन जाएगा।

इस अवसर पर सांसद डॉ. सुधांशु त्रिवेदी एवं श्री तेजस्वी सूर्या, भारत फोर्ज लिमिटेड के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक श्री बाबा कल्याणी और एलएंडटी रक्षा के कार्यकारी उपाध्यक्ष और प्रमुख श्री अरुण रामचंदानी भी उपस्थित थे।

'इंडिया मैन्युफैक्चरिंग शो' का छठा संस्करण प्रदर्शकों को एयरोस्पेस और रक्षा इंजीनियरिंग, स्वचालन (ऑटमेशन), रोबोटिक्स और ड्रोन जैसे विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रौद्योगिकियों, उपकरणों और अनुसंधान एवं विकास का प्रदर्शन करने के लिए एक मंच प्रदान करेगा। इसका उद्देश्य अपने प्रतिभागियों के लिए व्यापार और ज्ञान साझा करने के अवसर प्रदान करते हुए सर्वोत्तम ज्ञान, सर्वोत्तम प्रौद्योगिकियों और सर्वोत्तम प्रथाओं को साथ लाना है।

एबीबी/एसएस